भजन

तर्ज–रस्मे उलफत को निभाए तो निभाए

तेरी मेहरबानी है हमपे कितनी,अकेली जुबां से मै कह न पाऊं
मेरा रोम रोम जुबां बन के गाए,सिफत मेरे धनी की मैं कह न पाऊं

1–मुझ एक को कोट्न धड़ लगे हों, कोट्न मुंह में कोट्न जुबां बोलती हो
तेरे एक अहसान के बदले मेंमैं अपने को तो सर भर न पाऊं

2–मुझे माया के जाल से है निकाला,त्रैगुन के फंद को है काट डाला
तेरे चरणो मे है निसबत मेरी,घड़ी घड़ी पल पल गुण तेरे गाऊं

3–ईमां इश्क को मेरे कायम रखना,फरेबों की दुनिया मे फंस ना जाऊं
आत्म मेरी के तुम प्राण प्रीतम,मैं अंगना तेरी हूं तेरा इश्क पाऊं

4–मांग लिया खेल हमरी खता थी,जुदायगी की इतनी तो ही सजा दी
अब तो बख्श दो मैं अंगना हूं तेरी,बन अबला अब तो अर्ज गुजारूं